❍ 06 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बहुतों के कल्याण की युक्ति रची ?*

➢➢ *श्रेष्ठ पुरुषार्थ से अपनी ऊंची प्रालब्ध बनायी ?*

➢➢ *एक बल एक भरोसा रख हलचल की परिस्थिति में एकरस रहे ?*

➢➢ *बेहद सेवा की श्रेष्ठ वृत्ति रखी ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *बीजरूप को सदा साथ रखो तो माया का बीज ऐसा भस्म हो जायेगा जो फिर कभी भी उस बीज से अंश भी नहीं निकल सकेगा।* वैसे भी आग में जले हुए बीज से कभी फल नहीं निकलता इसलिए बीज को छोड़ *सिर्फ शाखाओं को काटने की मेहनत नहीं करो। बीजरूप द्वारा विकारों के बीज को खत्म कर दो तो बार-बार मेहनत करने से स्वत: ही छूट जायेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा हूँ"*

~✧ अपने को सदा स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा अनुभव करते हो? स्व का दर्शन अर्थात् स्व की पहचान। अच्छी तरह से स्व को पहचान लिया कि मैं कौन हूँ? अपने को अच्छी तरह से पहचाना है? सिर्फ मैं आत्मा हूँ-यह जानना ही जानना नहीं है लेकिन मैं कौन-सी आत्मा हूँ? ये स्मृति रहती है? आपके कितने टाइटल हैं? (बहुत हैं) तो टाइटल याद रहते हैं या भूल जाते हैं? कभी याद रहते हैं, कभी भूल जाते हैं? माया हार भी खिलाती रहे और कहते रहो कि मैं महावीर हूँ, ऐसे तो नहीं? *क्योंकि जो टाइटल बाप द्वारा मिले हैं वह हैं ही स्थिति में स्थित होने के लिये। तो जैसे टाइटल याद आये वैसी स्थिति बन जाये। वैसी स्थिति बनती है या हिलती रहती है? जैसे लौकिक दुनिया में अगर कोई टाइटल मिलता है तो टाइटल के साथ-साथ वह सीट भी मिलती है ना।*

~✧ समझो जज का टाइटल मिला, तो वह जज की सीट भी मिलेगी ना। अगर जज की सीट पर नहीं बैठे तो कौन मानेगा कि ये जज है। *अगर स्थिति नहीं है और सिर्फ बुद्धि में वर्णन करते रहते हो कि मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ, मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ और परदर्शन भी हो रहा है तो सीट पर सेट नहीं हुए ना। तो जो टाइटल स्मृति में लाते हो वैसी समर्थ स्थिति अवश्य चाहिये-तब कहेंगे कि हाँ यह स्वदर्शन चक्रधारी है, यह हीरो एक्टर है। एक्ट साधारण हो और कहे कि यह हीरो एक्टर है तो कौन मानेगा?* और सदा ये याद रखो कि ये टाइटल देने वाला कौन? दुनिया में कितना भी बड़ा टाइटल हो लेकिन आत्मा, आत्मा को

देगी। चाहे प्रेजीडेन्ट है या प्राइम मिनिस्टर है, लेकिन है कौन? आत्मा है ना।

〰✧ संगम पर स्वयं बाप बच्चों को टाइटल देते हैं। कितना नशा चाहिये! यह रूहानी नशा रहता है? देहभान का नशा नहीं। क्रोध कर रहे हैं और कहे कि मैं तो हूँ ही नूरे रत्न, ऐसा नशा नहीं। ऐसे तो नहीं करते हो? मातायें क्या करती हैं? घर में खिटखिट कर रहे हो और कहो कि हम तो हैं ही बाबा की अचल-अडोल आत्मायें! ऐसे तो नहीं करते? *तो सदा अपने भिन्न-भिन्न टाइटल्स को स्मृति में रखो और उस स्थिति में स्थित होकर चलो फिर देखो कितना मजा आता है। स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् सदा मायाजीत। स्वदर्शन चक्रधारी के आगे माया हिम्मत नहीं रख सकती।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ जैसे अभी भी कोई वाद-विवाद वाला आता है तो वाणी से और ज्यादा वाद-विवाद में आ जाता है। *उसको याद में बिठाए साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कराते हो ना।*

〰✧ एक सेकण्ड भी अगर याद द्वारा शान्ति का अनुभव कर लेते हैं तो स्वयं ही अपनी वाद-विवाद की बुद्धि को साइलेन्स की अनुभूति के आगे

सरेन्डर कर देते हैं तो इस *साइलेन्स की शक्ति का अनुभव बढ़ाते जाओ।* अभी यह साइलेन्स की शक्ति की अनुभूति बहुत कम है। साइलेन्स की शक्ति का रस अब तक मैजारिटी ने सिर्फ अंचली मात्र अनुभव किया है।

〰✧ हे शान्ति देवा! आपके भक्त आपके जड चित्रों से शान्ति का अल्पकाल का अनुभव करते हैं, ज्यादा करके मांगते भी शान्ति है क्योंकि शान्ति में सुख समाया हुआ है तो *बापदादा देख रहे थे कि शान्ति की शक्ति के अनुभवी आत्मायें कितनी हैं,* वर्णन करने वाली कितनी हैं और *प्रयोग करने वाली कितनी हैं।* इसके लिए - *'अन्तर्मुखता और एकान्तवासी' बनने की आवश्यकता है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ स्व-स्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हो ना! *स्व-स्थिति अर्थात् आत्मिक-स्थिति। पर-स्थिति व्यक्ति व प्रकृति द्वारा आती है। अगर स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे पर-स्थिति कुछ भी नहीं है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- दुरांदेशी विशाल बुद्धि से सच और झूठ का कन्ट्रास्ट सिद्ध करना*"

➳ _ ➳ मै आत्मा कभी अनुभवी थी, सिर्फ झूठ की ठोकरों की... मीठे बाबा ने *जीवन में आकर सत्य का खुबसूरत सवेरा दिखाकर*...मेरे जनमो के अंधकार को एक सेकण्ड में दूर कर दिया...और *आज सच की खनक से जीवन गुंजायमान हो उठा है*... अज्ञान के अंधेरो की आदी मै आत्मा... इसी को जीवन की नियति मानकर जीती जा रही थी... कि सहसा *भगवान ने जीवन में प्रवेश कर... मेरे जीवन से हर झूठ का सफाया कर दिया... मुझे तीसरा नेत्र देकर मुझे त्रिनेत्री सजा दिया.*.. इस नेत्र की बदौलत मै आत्मा अपने खुबसूरत सतयुग को निहार कर... आनन्द की चरमसीमा पर हूँ... और *आनन्द की यही लहरे... हर दिल पर उछालने वाली, ज्ञान गंगा बन मुस्करा रही हूँ.*.. दिल की यह बात मीठे बाबा को सुनाने मै आत्मा... मीठे बाबा के कमरे में प्रवेश करती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अथाह ज्ञान रत्नों की जागीर सौंपते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे...ईश्वर पिता ने मा नॉलेजफुल बनाकर ज्ञान के तीसरे नेत्र से रौशन किया है... तो सत्यता की इस रौशनी मे सच और झूठ का फर्क सिद्धकर दिखाओ... विश्व को ज्ञान की सत्य राहों का मुरीद बनाओ... *अज्ञान के अंधेरो से हर दिल को निकाल कर... सत्य की चमकती मुस्कराती

राहों पर चलाओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में असीम ख़ुशी को पाकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे...मै आत्मा अज्ञान की फिसलती राहो पर चलती हुई गर्त में जा रही थी... आपने मेरा हाथ पकड़कर, मुझे इस दलदल से निकाल, अपने दिल में बसा लिया है... मै आत्मा *इस सत्य का शंखनाद कर, हर दिल को जगा रही हूँ...और सच की चमक से भरे... जीवन की सौगात हर दिल को दिला रही हूँ.*.."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सारी सम्पत्ति का मालिक बनाते हुए कहा:-* " मीठे प्यारे लाडले बच्चे... सत्य पिता की सत्य भरी बाँहों में जो महके हो... उस ज्ञान की खशबू से हर मन को सुवासित करो... ईश्वर पिता द्वारा सुनी हुई सत्य की लहर को पूरे विश्व में बहाकर, अज्ञान का सूखापन मिटाओ... *दुरांदेशी विशाल बुद्धि बनकर,सच और झूठ का भेद सिद्ध कर, अज्ञान का पर्दा उठाओ..*.

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से ज्ञान धन का अखूट खजाना अपनी बाँहों में भरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा देह के भान में पतित हो चली बुद्धि संग यहाँ वहाँ कितना भटक रही थी... आपने प्यारे बाबा *अपनी फूलो सी गोद में बिठाकर... मुझे पावनता से सजाया है... बेहद का ज्ञान देकर मुझे दुरांदेशी बना दिया है.*.. अब यह ख़ुशी मै आत्मा.... हर मन को बाँट रही हूँ... भक्ति और ज्ञान का सच्चा फर्क समझा कर... आप समान बेहद का समझदार बना रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान की कूक सुनाने वाली ज्ञान बुलबुल बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता से जिन सच्ची खुशियो को बाँहों में समाकर... इस कदर खुशनुमा बने हो,.. यह सच्ची खुशियां सबके दामन में भी सजा आओ... *झूठ के दायरे से बाहर निकाल सच के सूर्य का अहसास कराओ... हर दिल सच्चाई को ही तो ढूंढ रहा है... उनकी मदद

करने वाले सच्चे रहनुमा बनकर.*.. उन्हें भी आप समान ज्ञान का धनी बनाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से सारी शक्तियो को लेकर, शक्तिशाली बनकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *सच की झनकार को पूरे विश्व में गूंजा रही हूँ... सबके मनो की उलझन को सुलझाकर, सच का सुनहरा सवेरा दिखा रही हूँ..*. मीठे बाबा आपने जो सत्य मुझ आत्मा को दिखाकर देह के जंजालों से छुड़ाया है... मै आत्मा सबके दामन में यह प्रकाश खिला रही हूँ... प्यारे बाबा से वरदानों की सौगात लेकर मै आत्मा कर्मक्षेत्र पर लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- श्रेष्ठ पुरुषार्थ से अपनी प्रालब्ध ऊंच बनानी है*"

➳ _ ➳ अपनी आंखों को मूंदे, बाबा के मधुर गीतों को सुनती एक रूहानी, अलौकिक मस्ती में बैठी मैं एक खूबसूरत दृश्य देख रही हूँ। इस दृश्य में मैं स्वयं को डबल ताज पहने सतयुग की महारानी के रूप में एक बहुत बड़े राजमहल में देख रही हूँ। *सोने से जड़ित राज सिहांसन पर विश्व महारानी के रूप में मैं बैठी हुई हूँ। सोने से जड़ित एक सुंदर छत्र मेरे सिर के ऊपर शोभायमान हो रहा है*। राजसी ठाठ - बाठ से सुसज्जित मेरे राहमहल में हर चीज आलीशान है। *दास - दासियां, नौकर - चाकर और प्रजा सभी मेरे राज्य में सुख, शांति, सम्पन्नता से भरपूर सुखमय जीवन व्यतीत कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ विश्व महारानी की अपनी इस अतिश्रेष्ठ भविष्य प्रालब्ध के इस अति सुंदर नजारे को देख मन ही मन मैं असीम खुशी और रोमांच से भर जाती हूँ और विचार करती हूँ कि मेरी इस भविष्य ऊंच प्रालब्ध का सारा मदार मेरे

अब के ब्राह्मण जीवन के पुरुषार्थ पर है। *अपने ब्राह्मण जीवन की स्मृति आते ही अब मैं अपने ब्राह्मण जीवन की उपलब्धियों में खो जाती हूँ*। अपने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन को देख मैं विचार करती हूं कि कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा, जिसे स्वयं भगवान ने करोड़ो आत्माओं में से चुना हैं।

➳ _ ➳ कोटो में कोई, कोई में भी कोई के गायन वाली वो विशेष आत्मा मैं हूँ जिसकी महिमा के गीत रोज स्वयं भगवान गाता है। रोज मुझे स्मृति दिलाता है कि मैं महान आत्मा हूँ। मैं विशेष आत्मा हूँ। मैं इस दुनिया की पूर्वज आत्मा हूँ। *अपने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन की स्मृति, मुझे मेरे जीवन को ऐसा सर्वश्रेष्ठ बनाने वाले दिलाराम बाबा की याद दिला रही है*। अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को याद करते - करते मैं अपने दिलाराम बाबा की मीठी - मीठी यादों में खो जाती हूँ। *मेरी याद संकल्प के रूप में जैसे ही मेरे दिलाराम बाबा तक पहुंचती है उनकी याद का रिटर्न उनकी शक्तिशाली किरणों के रूप में परमधाम से सीधे मुझ आत्मा पर बरसने लगता है*।

➳ _ ➳ मैं अनुभव करती हूँ कि परमधाम से आ रही सर्वशक्तियों की शक्तिशाली किरणों से शरीर का भान जैसे धीरे - धीरे समाप्त हो रहा है और मैं अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित होने लगी हूँ। मुझे केवल मेरा जगमग करता ज्योतिबिंदु स्वरूप ही दिखाई दे रहा है। *अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित होते ही अब मैं साकारी दुनिया को छोड़ दिव्य प्रकाश से प्रकाशित उस निराकारी दुनिया परमधाम की और जा रही हूँ जो मेरा वास्तविक घर है*। मेरे पिता परमात्मा का घर है। अपने इस मुक्तिधाम, शान्तिधाम घर मे मैं परममुक्ति का, गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ। मेरे शिव पिता परमात्मा से सतरंगी किरणे निकल कर मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और मैं स्वयं को सातों गुणों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ।

➳ _ ➳ सर्वगुण सम्पन्न स्वरूप बनकर अब मैं वापिस साकारी दुनिया मे लौट रही हूँ इस स्मृति और दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ कि अब मुझे अपने इस

ब्राह्मण जीवन मे श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके ऊंच प्रालब्ध बनानी है। *अपने संगमयुगी ब्राह्मण जीवन के सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य और अपनी भविष्य 21 जन्मो की ऊंच प्रालब्ध को स्मृति में रख अब मैं केवल अपने पुरुषार्थ पर ध्यान दे रही हूँ*। इस रावण राज्य की विनाशी चीजो को प्राप्त करने में समय ना गंवाकर, ज्ञानी तू योगी आत्मा बन अपने समय को सफल करते हुए अब मैं अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ रही हूँ।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं एक बल एक भरोसा रख हलचल की परिस्थिति में एकरस रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सर्वशक्ति सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव बेहद सेवा की श्रेष्ठ वृत्ति रखती हूँ ।*
✺ *मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं निष्काम सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *अपने भाई बहिनों के ऊपर रहमदिल बनो, और रहमदिल बन सेवा करेंगे तो उसमें निमित्त भाव स्वतः ही होगा।* किसी पर भी चाहे कितना भी बुरा हो लेकिन अगर आपको उस आत्मा के प्रति रहम है, तो आपको उसके प्रति कभी भी घृणा या ईर्ष्या या क्रोध की भावना नहीं आयेगी। *रहम की भावना सहज निमित्त भाव इमर्ज कर देती है।* मतलब का रहम नहीं, सच्चा रहम। मतलब का रहम भी होता है, किसी आत्मा के प्रति अन्दर लगाव होता है और समझते हैं रहम पड़ रहा है। तो वह हुआ मतलब का रहम। सच्चा रहम नहीं, *सच्चे रहम में कोई लगाव नहीं, कोई देह भान नहीं, आत्मा-आत्मा पर रहम कर रही है। देह अभिमान वा देह के किसी भी आकर्षण का नाम-निशान नहीं।* कोई का लगाव बाडी से होता है और कोई का लगाव गुणों से, विशेषता से भी होता है।

➳ _ ➳ लेकिन विशेषता वा गुण देने वाला कौन? *आत्मा तो फिर भी कितनी भी बड़ी हो लेकिन बाप से लेवता (लेने वाली) है। अपना नहीं है, बाप ने दिया है। तो क्यों नहीं डायरेक्ट दाता से लो।* इसीलिए कहा कि स्वार्थ का रहम नहीं। कई बच्चे ऐसे नाज-नखरे दिखाते हैं, होगा स्वार्थ और कहेंगे मुझे रहम पड़ता है। और कुछ भी नहीं है सिर्फ रहम है।

➳ _ ➳ *लेकिन चेक करो - निःस्वार्थ रहम है? लगावमुक्त रहम है? कोई अल्पकाल की प्राप्ति के कारण तो रहम नहीं है?* फिर कहेंगे बहुत अच्छी है ना, बहुत अच्छा है ना, इसीलिए थोड़ा.... थोड़े की छुट्टी नहीं है। अगर कर्मातीत बनना है तो यह सभी रूकावटें हैं जो बाडी कानसेस में ले आती हैं। अच्छा

है, लेकिन बनाने वाला कौन? *अच्छाई भले धारण करो लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं हो। न्यारे और बाप के प्यारे। जो बाप के प्यारे हैं वह सदा सेफ हैं।* समझा!

✺ *ड्रिल :- "सच्चा और निःस्वार्थ रहम की भावना रख न्यारे और बाप के प्यारे बनने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने इस स्थूल शरीर से निकलकर फरिश्ता बनकर ऊपर उड़ती हूँ... *इस साकारी दुनिया से ऊपर चाँद सितारों को पीछे छोड़ते हुए सूक्ष्म वतन में आकर ठहरती हूँ...* चारों ओर चाँदनी सा प्रकाश बिखरा हुआ है... मेरे अंदर भी ये प्रकाश समाने लगता है... थोड़ा आगे चलकर अपने सामने ब्रह्मा बाबा को देखती हूँ और उनके सम्मुख जाकर बैठ जाती हूँ...

➳ _ ➳ बाबा की शक्तिशाली किरणें मुझ आत्मा में प्रवाहित होने लगी हैं... *मेरे पुराने सब आसुरी संस्कार भस्म हो रहे हैं और दैवी संस्कार इमर्ज हो रहे हैं*... बाबा की शक्तिशाली किरणें मेरी सब कमी कमज़ोरियों को समाप्त कर रही हैं और अब मैं आत्मा बाबा का प्रकाश स्वयं में महसूस कर रही हूं... एक दम हल्की हो गयी हूँ...

➳ _ ➳ बाबा के प्यार की किरणें मेरे क्रोध के संस्कार को समाप्त कर रही हैं और मैं आत्मा अपने मूल स्वरूप शान्त स्वरूप में स्थित हो गयी हूँ... *किसी भी आत्मा के प्रति ईर्ष्या या घृणा के भाव समाप्त हो रहे हैं और रहम के संस्कार मुझ आत्मा में भर रहे हैं*... मेरे संपर्क में आने वाली हर आत्मा को मैं स्नेह देती हूँ... कैसी भी आसुरी संस्कार वाली आत्मा हो मैं उससे घृणा नहीं करती उसे रहम के वाइब्रेशन दे उसके संस्कार परिवर्तन में सहयोग देती हूं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा देह के भान से न्यारी हूँ... देह अभिमान और देह के आकर्षण से मुक्त हूँ... *सर्व आत्माएं मेरे भाई बहन हैं और मैं अपने सभी भाई बहनों के प्रति रहम की भावना रखती हूँ...* बाबा का प्यार मुझमें वो अलौकिक

ख़ुशी भर रहा है जिससे मैं किसी भी आत्मा से ईर्ष्या नहीं करती... सबको सहयोग दे आगे बढ़ाती हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाबा के प्यार में समाती जा रही हूँ... *बाबा के साथ सर्व संबंध जोड़ कर मैं आत्मा इस संसार के लगाव से मुक्त होती जा रही हूँ*... संसार के वैभव, देह के संबंध सब कुछ पीछे छोड़ रही हूँ... *और मैं आत्मा बाबा की प्यारी बनती जा रही हूँ*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔